

कृतिपत्रिका के लिए सूचनाएँ।

- १) सूचना के अनुसार गद्य, पद्य, विशेष अध्ययन तथा व्यावहारिक हिंदी की कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित है।
- २) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही उपयोग कीजिए।
- ३) सभी आकृतियों में उत्तर पेन से लिखना आवश्यक है।
- ४) व्याकरण विभाग में पूछी गयी कृतियों के उत्तरों के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं है।

(विभाग -१: गद्य- 20 अंक)

प्र.१ (अ). निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

ऊपर की घटना को बारह बरस बीत गए। जगत में बहुत-से परिवर्तन हो गए। कई बस्तियाँ उजड़ गईं। कई वन बस गए। बूढ़े मर गए। जो जवान थे, उनके बाल सफेद हो गए।

अब बैजू बावरा जवान था और रागविद्या में दिन-ब-दिन आगे बढ़ रहा था। उसके स्वर में जादू था और तान में एक आश्चर्यमयी मोहिनी थी। गाता था तो पत्थर तक पिघल जाते थे और पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते थे। लोग सुनते थे और झूमते थे तथा वाह -वाह करते थे। हवा रुक जाती थी। एक सम्राट् बंध जाता था।

एक दिन हरिदास ने हँसकर कहा "वाह। मेरे पास जो कुछ था, वह मैंने तुझे दे डाला। अब तू पूर्ण गंधर्व हो गया है। अब मेरे पास और कुछ नहीं, जो तुझे दूँ"

बैजू हाथ बाँधकर खड़ा हो गया। कृतज्ञता का भाव आँसुओं के रूप में बह निकला। चरणों पर सिर रखकर बोला "महाराज। आपका उपकार जन्म भर सिर से न उतरेगा।

हरिदास सिर हिलाकर बोले - "यह नहीं बेटा। कुछ और कहो। मैं तुम्हारे मुँह से कुछ और सुनना चाहता हूँ।"

बैजू - "आज्ञा कीजिए।"

हरिदास - तुम पहले प्रतिज्ञा करो।"

बैजू ने बिना सोच-विचार किए कह दिया- "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि..."

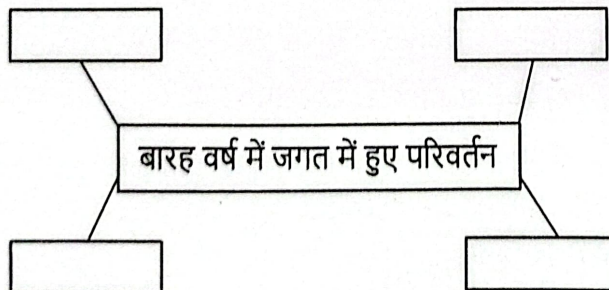
हरिदास ने वाक्य को पूरा किया "इस रागविद्या से किसी को हानि न पहुँचाऊँगा।"

बैजू का लहू सूख गया। उसके पैर लड़खड़ाते लगे। सफलता के बाग परे भागते हुए दिखाई दिए। बारह वर्ष की तपस्या पर एक क्षण में पानी फिर गया। प्रतिहिंसा की छुरी हाथ आई तो गुरु ने प्रतिज्ञा लेकर कुंद कर दी। बैजू ने होठ काटे, दाँत पिये और रक्त का घूँट पीकर रह गया। मगर गुरु के सामने उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। गुरु गुरु था, शिष्य शिष्य था। शिष्य गुरु से विवाद नहीं करता।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

(02)

i)



२) i) वचन परिवर्तन कीजिए।

(01)

1) चरणों - _____ 2) बस्ती - _____

(01)

ii) लिंग परिवर्तन कीजिए।

1) शिष्य - _____ 2) गुरु - _____

(02)

३) स्वमत :

'बिन गुरु होय न ज्ञान' - इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

P.T.O

(आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

बड़े प्रयत्न से बनवाई रजाई, कोट जैसी नित्य व्यवहार की वस्तुएँ भी जब दूसरे ही दिन किसी अन्य का कष्ट दूर करने के लिए अंतर्धान हो गईं तब अर्थ के संबंध में क्या कहा जावे, जो साधन मात्र है। यह संध्या भी मेरी स्मृति में विशेष महत्त्व रखती है जब श्रद्धेय मैथिलीशरण जी निराला जी का आतिथ्य ग्रहण करने गए।

बगल में गुप्ता जी के बिछौने का बंडल दबाए, विचारसलाई के क्षण प्रकाश, क्षीण अंधकार में तंग सीढ़ियों का मार्ग दिखाते हुए निराला जी हमें उस कक्ष में ले गए जो उनकी कठोर साहित्य साधना का मूक साती रहा है।

आले पर कपड़े की आधी जली बत्ती से भरा पर तेल से खाली मिट्टी का दीया मानो अपने नाम की सार्थकता के लिए जल उठने का प्रयास कर रहा था।

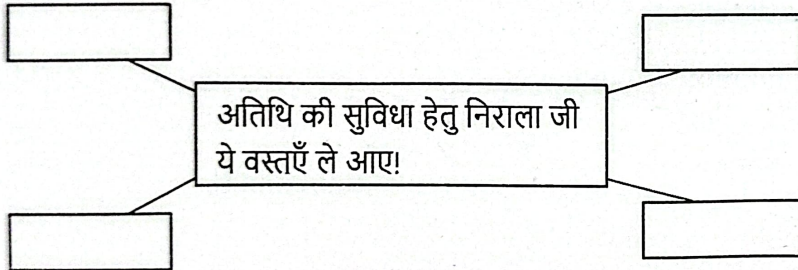
वह आलोकरहित, सुख-सुविधा शून्य पर गृहस्वामी के विशाल आकार और उससे भी विशालतर आत्मीयता से भरा हुआ था। अपने संबंध में बेसुध निराला जी अपने अतिथि की सुविधा के लिए सतर्क प्रहरी हैं। अतिथि की सुविधा का विचार कर वे नया घड़ा खरीदकर गंगाजल ले आए और धोती धादर जो कुछ घर में मिल सञ्च, सब तख्त पर बिछाकर उन्हें प्रतिष्ठित किया।

तारों की छाया में उन दोनों मर्यादावादी और विद्रोही महाकवियों ने क्या कहा सुना, यह मुझे ज्ञात नहीं पर सबेरे गुप्त जी को ट्रेन में बैठकर वे मुझे उनके सुख शयन का समाचार देना न भूले।

ऐसे अवसरों की कमी नहीं जब वे अकस्मात् पहुँचकर लगे मेरे कहने पर कुछ लकड़ियाँ थोड़ा भी आदि रखवा दो। अतिथि आए है, घर में सामान नहीं है।

१) उत्तर लिखिए !

(02)



२) निम्नलिखित शब्दों के लिए गद्यांश में आए हुए समानार्थी शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(02)

- १) मेहमान → _____
- २) प्रयास → _____
- ३) शाम → _____
- ४) दीपक → _____

३) 'आतिथ्य भाव' हमारे संस्कार हैं, इस विषय पर अपने विचार ४० से ५० शब्दों में लिखिए।

(02)

इ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग ८० से १०० शब्दों में लिखिए। (कोई दो)

(06)

- १) निराला जी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।
- २) 'आदर्श बदला' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
- ३) 'पाप के चार हथियार' पाठ का संदेश लिखिए।

ई) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में लिखिए। (कोई दो)

(02)

- १) बदरीनाथ का साहित्यिक नाम लिखिए।
- २) सुदर्शन ने इस लेखक की लेखन परंपरा को आगे बढ़ाया है।
- ३) कहानी विधा की विशेषताएँ लिखिए।
- ४) 'निराला' जी का मूल नाम लिखिए।

(विभाग: २ पद्य (२० अंक))

प्र.२(अ). निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

सूत्र यह तोड़ नहीं सकते है।
तोड़कर जोड़ नहीं सकते है।
व्योम में जाए, कहीं भी उड़ जाए,
भूमि को छोड़ नहीं सकते हैं।

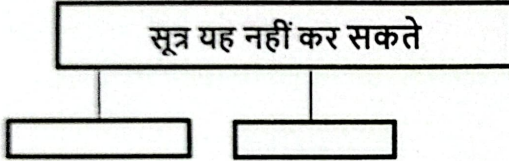
सत्य है राह में अंधेरा है,
रोक देने के लिए घेरा है।
काम भी और तुम करोगे क्या,
बढ़े चलो सामने अंधेरा है।

बल नहीं होता सताने के लिए,
वह है पीड़ित को बचाने के लिए।
बल मिला है तो बल बनो सबके,
उठ पड़ो न्याय दिलाने के लिए।

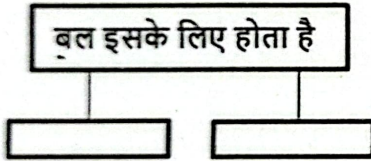
१) कृति पूर्ण कीजिए।

(01)

i)



ii)



(01)

२) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(02)

- १) विश्वास X _____ २) अंधेरा X _____
३) सत्य X _____ ४) सामने X _____

३) अपने बल का उपयोग समाज के उत्थान के लिए करना चाहिए इस विषयपर अपने विचार लिखिए।

(02)

(आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

सरसुति के भंडार की, बड़ी अपूरव बात।
ज्यों खरचे ल्यौ-ल्यौ बढ़े, बिन खरचे घटि जात ॥

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी भली बुरी कहि देत ॥

अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिए दौर। तेते
पाँव पसारिए, जेती लौंबी सौर ॥

फेर न हवै हैं कपट सों, जो कीजै ब्यौपार।
जैसे हौड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ॥

ऊँचे बैठे ना लहैं, गुन बिन बड़पन कोइ।
बैठो देवल सिखर पर, वायस गरुड़ न होइ ॥

उद्यम कबहुँ न छाँडिए, पर आसा के मोद। गागरि
कैसे फोरिए, उनयो देखि पयोद ॥

(02)

१) उत्तर लिखिए ।

- i) इनके भंडार की अपूरब बात हैं - _____
 ii) आँखों की तुलना इससे की हैं - _____
 iii) पधांश में प्रयुक्त पानी रखने के काम आनेवाला मिट्टी का बरतन - _____
 iv) दूसरे की आशा के भरोसे यह छोड़ना नहीं हैं - _____

२) निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध (सही) रूप में लिखिए।

(02)

- १) सरसुति - _____ २) अपूरब - _____
 ३) गुन - _____ ४) सिखर - _____

३) 'चादर देखकर पैर फैलाना बुद्धिमानि कहलाती है' - इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

(02)

इ) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 'गुरुबानी' कविता का रसास्वादन कीजिए ।

१) रचनाकार का नाम

(01)

२) पसंद की पंक्तियाँ

(01)

३) पंक्तियाँ पसंद आने का कारण

(02)

४) कविता की केंद्रीय कल्पना

(02)

ई) निम्नलिखित प्रश्नों का एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए। (कोई दो)

(02)

- १) गुरु नानक जी की रचनाओं के नाम लिखिए।
 २) दोहा छंद की विशेषता लिखिए।
 ३) त्रिलोचन जी के दो काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।
 ४) कवि वृंद की प्रमुख रचनाएँ लिखिए।

(विभाग : ३ विशेष अध्ययन - १० अंक)

प्र.३ (अ) निम्नलिखित पहित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियों कीजिए ।

सेतु: मैं

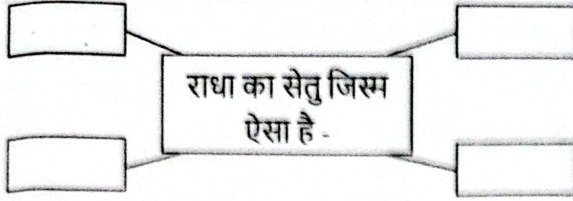
नीचे की घाटी से
 ऊपर के शिखरों पर
 जिसको जाना था वह चला गया -
 हाथ मुझी पर पग रख
 मेरी बाँहों से
 इतिहास तुम्हें ले गया!

सुनो कनु, सुनो
 क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए
 लीलाभूमि और युद्धक्षेत्र के
 अलंघ्य अंतराल में!

अब इन सूने शिखरों, मृत्यु-घाटियों में बने
 सोने के पतले गुँथे तारों वालों पुल- सा
 निर्जन
 निरर्थक
 काँपता-सा, यहाँ छूट गया - मेरा यह सेतु जिस्म
 - जिसको जाना था वह चला गया

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

(02)



२) निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए।

(02)

- १) शिखरों - _____ २) घाटी - _____
 ३) बाँह - _____ ४) लीलाएँ - _____

३) स्वमत।

(02)

'वृक्ष की उपयोगिता' इस विषय पर अपने विचार लिखिए

आ). निम्नलिखित में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए।

(04)

- १) कनुप्रिया की दृष्टि से जीवन की सार्थकता बताइए।
 २) 'कवि ने राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्दबद्ध किया है' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

(विभाग: ४ व्यावहारिक हिंदी, अपठित गद्यांश एवं पारिभाषिक शब्दावली - २० अंक)

प्र.४ (अ) निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लगभग १०० से १२० शब्दों में लिखिए।

(06)

- १) भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम पर फीचर लेखन कीजिए।

अथवा

निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

पल्लवन के लिए भाषा के ज्ञान के अलावा विश्लेषण, संश्लेषण, तार्किक क्षमता के साथ-साथ अभिव्यक्तिगत कौशल की आवश्यकता होती है। इसमें भी आख्यात के प्रत्येक अंश को विषयवस्तु की गरिमा के अनुकूल विस्तारित करना होता है। भाव विस्तार को भी पल्लवन कहा जाता है।

तन्वी : सर जी, क्या भाव विस्तार के साथ-चिंतन भी होता है?

अध्यापक : अच्छा प्रश्न पूछा तुमने, पल्लवन में भाव विस्तार के चिंतन का स्थान भी महत्वपूर्ण होता है। संसार में जितने महान चिंतक, साहित्यिक, विचारक हैं उनके गहन चिंतन के में जिल विचारों और अनुभूतियों जन्म होता है, उसमें सूचनात्मक आ जाती है। सरसरी दृष्टि से पढ़ने पर उसका सामान्य अर्थ ही समझ में आता है, किंतु सम्यक अर्थबोध एवं अर्थ विस्तार को समझने के लिए गहराई उतरना पड़ता है। यह उस गंभीर भायाले धावयखंड, वाक्य या वाक्य समूह में गोता लगाते हैं। त्यों त्यों हम उसके मर्मस्पर्शी भावों को समझने लगते हैं। अर्थात् छोटे-छोटे वाक्यों या बानों में बंद विचारों को खोल देना, फैला देना विस्तृत कर देना ही पल्लवन है।

रोशन: हम जैसे विद्यार्थियों के लिए पल्लवन कला को आत्मसात करने की क्या आवश्यकता है? हम तो साहित्यकार नहीं हैं। इस संदर्भ में जानकारी दीजिए सर।

अध्यापक : रोशन। तुम अच्छे-अच्छे प्रश्न करते हो। यह जिज्ञासा सराहनीय है। इसपर चर्चा होनी ही चाहिए।

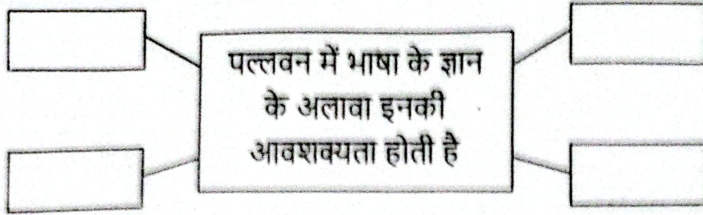
रोशन: जी सर। हमें इस विषय की भी जानकारी चाहिए।

अध्यापक : वर्तमान युग विज्ञान का युग है। आज के बच्चे वैज्ञानिक युग में पल रहे हैं हमारे साहित्य में लेखक, विचारक, कवि अपने भीति विचारी को चयन करते हैं। हम उनके विचारों को समझ नहीं सकते, तब पल्लवन हमारी सहायता करता है। परंतु बचो। केवल विषयगत ज्ञान होना अनिवार्य नहीं होता है अपितु आज के मुबाओं के लिए अनेक क्षेत्रों का प्रवेश द्वार तैयार हो जाता है। पल्लवन व्यक्तित्व निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका तैयार कर सकता है।

तन्वी : वह कैसे?

अध्यापक : अब गौर से सुनो, शारीरिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास भी आवश्यक होता है। केवल शिक्षा तथा साहित्य में ही पल्लवन का महत्व नहीं है बल्कि उत्कृष्ट बक्ता, पत्रकार, नेता, प्रोफेसर, वकील आदि पद प्राप्त करने के लिए इस कला से अवगत होना आवश्यक है। इतना ही नहीं, कहानी लेखन, संवाद-लेखन, विज्ञापन, समाचार, राजनीति तथा अनेक व्यवसायों में भी पल्लवन का उपयोग होता है। हमारे कैरियर की दृष्टि से भी पल्लवन उपयुक्त है।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।



२) परिच्छेद में से शब्दपुग्म ढूँढ़कर लिखिए।

- १) _____ २) _____
३) _____ ४) _____

३) स्वमत।

'वर्तमान युग विज्ञान का युग है' इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए

आ). निम्नलिखित में से किसी एक का ८० से १०० शब्दों में लिखिए।

- १) पल्लवन की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।
२) फीचर लेखन करते समय बरती जानेवाली सावधानियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

- १) विषय का _____ शीर्षक फीचर की आत्मा है।
अ) महत्वपूर्ण ब) अर्थपूर्ण क) औचित्यपूर्ण ड) ज्ञानपूर्ण
२) स्नेहा ने _____ के पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश लिया।
अ) चित्रकारिता ब) पत्रकारिता क) संगणक ड) अभिनय
३) विधाता की सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वाधिक गुणसंपन्न कृति _____ है
अ) मनुष्य ब) पक्षी क) पेड़ ड) पर्वत
४) विवेक, बुद्धि और ज्ञान मानव की _____ संपदा है।
अ) शारीरिक ब) सामाजिक क) बौद्धिक ड) आर्थिक

इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गयी सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए।

अहिंसा की जो मेरी धारणा है, उसके अनुसार वह प्रतिकार की अपेक्षा दृष्ट के विरुद्ध संघर्ष करने का कहीं ज्यादा सक्रिय और सबल साधन है। मैं अत्याचारी की तलवार की धार को उससे भी ज्यादा धारदार शस्त्र से बौथरा करना नहीं चाहता, बल्कि उसकी इस आशाको भूषित करना चाहता हूँ कि मैं उसवर शारीरिक प्रतिरोध करूँगा। इसके बजाय मैं जो आत्मिक प्रतिरोध करना उससे वह भ्रांत हो जायेगा। मेरा आत्मिक प्रतिरोध पहले तो उसका चकित बार देगा, पर अंततः यह उसका लोहा गान लेगा, और ऐसा करने से उसकी अवमानना नहीं हो बल्कि उत्थान होगा। आप कह सकते हैं कि यह एक आदर्श स्थिति है।

मैं मानता हूँ कि जो शक्तिशाली है, वह दुर्बल को लूटेगा। लेकिन यह बात मनुष्य की आत्मा के बारे में कही गई है, शरीर के बारे में नहीं। अगर यह शरीर के बारे में कही गई होती तो हम दुर्बलता से कभी मुक्त न हो पाते। लेकिन आत्मा की शक्ति पूरी दुनिया के सशस्त्र विरोध का मुकाबला कर सकती है। आत्मा की यह शक्ति दुर्बल-से-दुर्बल शरीर में भी अर्जित की जा सकती है।

अहिंसा मानवता को उपलब्ध सबसे बड़ा बल है। मनुष्य ने अपनी होशियारी से विनाश के जो शक्तिशाली-से-शक्तिशाली अस्त्र शस्त्र बनाए हैं, अहिंसा उनसे भी अधिक शक्तिशाली है। विनाश मानवों का नियम नहीं है। मनुष्य कभी अपने भाई को मारकर नहीं बल्कि जरूरत पड़े तो उसके हाथों मरने के लिए तैयार रहकर आजादी से जीता है।

अहिंसा रेडियम की तरह काम करती है। इसी प्रकार, थोड़ी-सी भी सच्ची अहिंसा चुपचाप, सूक्ष्म और अदृश्य रूप से काम करती है।

१) निम्नलिखित वाक्यों सत्य है या असत्य वह लिखिए।

(02)

१) अहिंसा एक आत्मिक शक्ति है।

२) आत्मा की शक्ति दुर्लभ-से-दुर्लभ शरीर में अर्जित नहीं की जा सकती।

३) अहिंसा मानवता का सबसे बड़ा बल है

४) अहिंसा रेडियम की तरह काम नहीं करती।

२) निम्नलिखित शब्दों के लिए परिच्छेद में आए प्रत्यययुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

(02)

१) आत्मा - _____

२) शक्ति - _____

३) दुर्बल - _____

४) आज़ाद - _____

३) 'अहिंसा का जीवन में महत्व' इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(02)

ई) निम्नलिखित में से किन्हीं चार पारिभाषिक शब्दों के लिए हिंदी अर्थ लिखिए।

(04)

1) TRANSACATION

2) MEDICAL BENEFIT

3) OUTPUT

4) EXPERT

5) ACTION

5) INTERPRETER

7) ACKNOWLEDGEMENT

8) BANK STATEMENT

(विभाग - ५ व्याकरण)

प्र.५ (अ) निम्नलिखित वाक्यों का कोष्ठक में दी गई सूचनाओं के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

(02)

१) सुधारक का सत्य निंदा की रगड़ से और भी प्रखर हो जाता है। (अपूर्ण भूतकाल में बदलिए)

२) इस वेग में वह जाएगा। (पूर्ण भूतकाल में बदलिए)

३) इसकी भी मौत आ गई। (पूर्ण वर्तमानकाल में बदलिए)

४) मैं इसके परिणाम की प्रतीक्षा करती हूँ। (सामान्य भविष्यकाल में बदलिए)

आ). निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत अलंकार पहचानकर उनके नाम लिखिए। (किन्हीं दो)

(02)

१) पीपर पात सरिस मन डोला

२) चरण सरोज पखारन लागा

३) उस काल क्रोध के मारे, तनु उसका काँपने लगा

मानो हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जागा

४) करत-करात अभ्यास के जडमति होत सुजान

रसररी आवत जात हे सिल पर पड़त निशान

इ) निम्नलिखित निम्नलिखित पंक्तियों में उद्धृत रस पहचानकर उनके नाम लिखिए। (किन्हीं दो)

(02)

१) सुडुक सुडुक घाव से पिल्लू मवाद निकाल रहा है,

नासिका से श्वेत पदार्थ निकाल रहा है

२) समदरसी है नाम तिहारो, सोई पार करो,

इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो,

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो,

सो दुविधा पारस नहीं जानत, कंचन करत खरो।

३) राम के रूप निहारती जानकी,
कंगन के नग की परछाही,
यातैं सबै सुधि भूलि गई,
कर टेकि रही पल टारत नाही ।

४) माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय,
एक दिन ऐसा आएगा, में रौंदूंगी तोय

ई) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उचित वाक्यों में प्रयोग कीजिए । (किन्ही दो)

(02)

१) बिलख - बिलखकर रोना

२) वाह - वाह करना

३) कटे पर नमक छिड़कना

४) मुट्ठी गर्म करना

उ) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए । (किन्ही दो)

(02)

१) वह स्वरग का अमरित है ।

२) उसके सत्य का पराजय हो जाता है ।

३) परंतू अग्यान भी अपराध है ।

४) एक में सफल सूत्र संचालन के रूप में प्रसिद्ध हो गया ।
